

नव जनवाचन आंदोलन

– हां, हां, माली को जेल में बंद करवा दो!

– उसे बेंत लगाओ!

– नहीं, नहीं, उसे कालापानी नहीं, फांसी दी जाए!

बच्चे माली के सख्त खिलाफ हैं क्योंकि वह उन्हें बाग में घूमने नहीं देता, फूल तोड़ने नहीं देता और उन पर कड़ा पहरा रखता है।

'बच्चों की कचहरी' में बच्चे ही फरियादी हैं, बच्चे ही जूरी और बच्चे ही जज। इसलिए वे अपनी आजादी में बाधा पहुंचाने वाले माली को 'कड़ी' सजा सुनाते हैं।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति



बाल नाटक शृंखला

बच्चों की कचहरी





भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।



बच्चों की कचहरी केशवचंद्र वर्मा	Bachchon Ki Kachahari *Keshavachandra Verma*
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	*Copy Editor* Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन मनोज पंडित	*Illustration* Manoj Pandit
ग्राफिक्स अभय कुमार झा	*Graphics* Abhay Kumar Jha
कवर डिजाइन व लेआउट गॉडफ्रे दास	*Cover Design & Layout* Godfrey Das
प्रथम संस्करण अगस्त 2007	*First Edition* August 2007
सहयोग राशि 12 रुपये	*Contributory Price* Rs. 12.00
मुद्रण सन साइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	*Printing* Sun Shine Offset New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS AUG 2007 2K 1200 NJVA 00038/2007



बच्चों की कचहरी

पात्र

गोपी	टिल्लो
रामू	परभू
चंपी	माली
जूरी	राजू



गोल कमरे में सब बच्चे जमा हैं। हल्ला – गुल्ला, शोर। आपस में बातचीत करने की आवाज।

गोपी : भई, अगर इतना हल्ला – गुल्ला मचाओगे तो फिर हमलोग जिस काम के लिए यहां इकट्ठे हुए हैं वह सौ जन्म में भी न हो पाएगा।

रामू : हां, सुनो। मैं कह रहा हूं कि अगर अपने अधिकारों के लिए हमलोगों को लड़ना है तो एका रखकर ही आगे बढ़ सकते हैं। आप सब लोगों की अगर एक राय हो तभी हमलोग माली पर मुकदमा चलाएं। ··· ऐसे कई आदमी हैं जो हम बच्चों के अधिकारों का ठीक – ठीक ख्याल नहीं करते। हम उन सबको बारी – बारी से अपनी कचहरी में लाएंगे।



इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सब लोग एक राय होकर हमें बताएं। हम सबसे पहले माली को बुलाना चाहते हैं।



कई बच्चे : (1) हां, हां, माली को जेल में बंद करवा दो दादा!

(2) जेल कर दो!!

(3) बेंत लगाओ दादा!!!

रामू : (समझाते हुए) ठीक है, ठीक है, सब हो जाएगा। ··· सब हो जाएगा। मगर आपकी राय है न?

कई स्वर : हां, हां! राय है··· मुकदमा चलाओ।

गोपी : अच्छा तो अब जज किसे बनाया जाए?

चंपी : राजू दादा को जज बनाओ। एक झापड़ में सबको ठीक कर···

गोपी : चुप रह चंपी। जज कहीं झापड़ थोड़े ही मारता है! वह तो फांसी देता है, फांसी!

टिल्लो : तब तो परभू भैया को बनाओ। इन्होंने तो जमील को उठा के पटक दिया था। इनको कह दो, ये फांसी लगा देंगे।

गोपी : तू भी बड़ी उल्लू है टिल्लो। जज थोड़े ही फांसी लगाने बैठता है। जज तो हुक्म करता है सोच-समझकर···



परभू : मेरी मानो मैं कहूं। भाई सोचने-समझने वाली बात है। रम्मू दादा को जज बनाओ। वही सबसे होशियार आदमी अपने बीच में है। क्यों भाई, क्या कहते हो?

सब : हां, हां, ठीक है...

दृश्य परिवर्तन

कमरा कचहरी की तरह सजा दिया गया है। रामू जज की कुर्सी पर बैठा हुआ। चार-पांच लड़कों की जूरी बनाकर बैठा दी गई। टिल्लो, चंपी और गोपी मुकदमा चला रहे हैं। गोपी वकालत कर रहा है। राजू, परभू पुलिस के रूप में मौजूद हैं। हल्ला मचता है।





रामू : *(हथौड़े से मेज ठोकता हुआ)* आर्डर, आर्डर। आप सब चुप होकर बैठिए। मैं अदालत की कार्यवाही शुरू करना चाहता हूं। हां, टिल्लो देवी, आपको क्या कहना है?

टिल्लो : रामू दादा।

रामू : मिस्टर गोपी, आप इनके वकील हैं। आप इनको बताइए कि अदालत में कैसे बातचीत की जाती है।

गोपी : अरे टिल्लो'' जज साहब कहो, जज साहब।

टिल्लो : जज साहब'' हमने बाग में से एक गुलाब का फूल तोड़ लिया था। उसके लिए माली ने हमको डांटा है और कहा है कि बाबूजी से शिकायत कर देंगे।





रामू : माली को पेश किया जाए। राजू, ले आओ जाकर।

राजू : यह हाजिर है जज जी। गोविंद माली हाजिर है।

सब : *(एक साथ)* अच्छा, यही है?

माली : का बात है छोटे सरकार?

रामू : तुमने टिल्लो को फूल तोड़ने पर डांटा था?

माली : नाहीं छोटे सरकार। बिटिया कली-कली तोड़ के फेंकती रही, तो हमने मना कै दिया। ...हमका तो भइया...

रामू : *(हथौड़ा ठोकते हुए)* शट अप! बिटिया का मना कै दिया? क्या माने है?

गोपी : हां दादा... अरे जज साहब, हमको भी गोविंद माली ने बाबूजी से डांट खिलवाई थी।

चंपी : हमको भी कहा था कि कान खिचवाएंगे।

रामू : आर्डर, आर्डर, मैं कहता हूं मिस्टर गोपीनाथ, आप टिल्लो देवी के वकील की हैसियत से हैं कि आपको खुद कुछ शिकायत है?

गोपी : *(सकपकाकर)* जी... जी नहीं, जी हां, मुझे जो कहिए, चाहे जो समझिए। मैं तो वकील भी हूं और फरियादी भी हूं।

सब बच्चे : गोविंद माली को सजा दी जाए।

रामू : आर्डर, आर्डर। हां, माली तुमको क्या कहना है इस बारे में?

माली : अब छोटे सरकार मैं का कहें? जौन कुछ हमका कहे का रहा हम तो पहिलेन कहि दीन। हम का करी? बड़े सरकार रोजै फूल गिनत हैं। जब फूल गायब रहत है, बड़े सरकार उनके हिसाब मांगत हैं। फिर तू पंच जी सब फूल तोड़ लेत हौ तों फिर कहां से हम उनका हिसाब देई?

रामू : कुछ नहीं... यह सब फिजूल बात कर रहे हो।

चंपी : फूल बच्चों के लिए नहीं है तो क्या बूढ़ों के लिए है?

टिल्लो : क्या बाबूजी फूलों से खेलते हैं?

गोपी : माली झूठ बोलता है। बाबूजी तो कुछ नहीं कहते। यही हमलोगों पर अपनी साहबी जमाते हैं। लगता है कि बाग इन्हीं के बाप का बनवाया हुआ है। अब तो हमने और राजू ने तय किया था कि अगर फिर कभी हमारी शिकायत की तो हम लोग खूब इनकी मरम्मत करेंगे।

रामू : आर्डर, आर्डर। शांत... गड़बड़ बात अदालत में मत बोलिए। माली साहब, आपका कोई वकील भी है?

माली : सरकार हमार कौन वकील है। जौन कहित है मान लेव। तौ मान लेव नाही तों फिर इहै समुझि लेव



कि हम जूठै कहित हैं।

सब : हां, हां, झूठ है, बिल्कुल झूठ।

रामू : अच्छी बात है। हर एक आदमी ने इसकी बात भी सुन ली है। और टिल्लो देवी की बात भी पता चल गई है। अब जूरी लोगों की क्या राय पड़ती है?

जूरी : *(सभी सदस्य)* इसको फांसी दी जाए।



सब : हां, हां, बहुत ठीक। *(ताली बजती है।)*

रामू : नहीं, मेरी राय है कि जूरी ने बहुत सख्ती से काम लिया है। अब भी कुछ सोच-समझ लिया जाए तब फिर जूरी अपनी राय दे। सजा बहुत कड़ी दे दी गई है।

जूरी : *(सभी सदस्य)* कालापानी भेजा जाए।

एक स्वर : लेकिन वहां पर यह बाग की रखवाली करेगा।

दूसरा स्वर : और वहां के बच्चों को भी तकलीफ देगा।

सब : नहीं, नहीं, कालापानी नहीं, फांसी दी जाए।

रामू : *(हथौड़ा ठोकता हुआ)* आर्डर, आर्डर! जूरी लोग क्या कहते हैं?

जूरी : हमारी राय में जज साहब खुद ही अपनी राय दें।

माली : छोटे सरकार। हमका माफ कै दीन जाए। अब आप लोग जौन-जौन कहि हैं, तौन-तौन हम लोग करब। हम सब नौकर-चाकर आपै लोगन के सेवा के बरै तो हइन। हमका जौन चाहै तौन सजा दै लैव। चाही तो माफ कै दैव।

जूरी : *(सब लोग)* नहीं, नहीं, हरगिज माफ नहीं किया जाए। इस तरह से करने पर इनकी आदत खराब हो जाएगी। आप लोग सब क्या कहते हैं?

सब लोग : फांसी, फांसी। (चिल्लाकर) फांसी दो, इनको।

रामू : *(बहुत गंभीर होकर निर्णय देता है)* आर्डर, आर्डर! सुनिए। जो कुछ भी दोनों पक्षों ने कहा-सुना है, मैंने सब सुन लिया। मैं समझता हूं कि गोविन्द को



माफ कर देना इस तरह की हरकतों को भड़कावा देना होगा। इसीलिए सोचता हूं कि गोविंद माली को सजा जरूर देनी चाहिए।

सब लोग : *(चिल्लाकर)* वाह-वाह! हियर! हियर!

(ताली बजाते हैं, सीटी बजाते हैं।)

रामू : शांत, शांत! जी हां, यही सोच-समझकर मैं गोविंद माली को यह सजा देना चाहता हूं कि यह पचास अमरूद हम लोगों को लाकर दे जो कि हम लोग आपस में बांटकर खाएंगे।

सब लोग : वाह-वाह! *(ताली बजाते हैं।)*

रामू : जी हां। और मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि आइंदा से माली जब कभी भी बाग में रहे तब हमलोग न जाएं और अगर जाएं भी तो उसकी आंख बचाकर जाएं। और अगर माली कभी देख भी ले तो हमलोगों से आंखें चुरा ले।

सब लोग : वाह-वाह! वेरी गुड *(शोर)*

रामू : शांत। जी हां, और इतवार के दिन हमलोगों की छुट्टी रहती है, उस दिन माली बिल्कुल ही बाग में न जाए।

सब लोग : बहुत अच्छा… बहुत अच्छा… वाह वाह!

रामू : सब लोग खुश हैं। और माली तुम भी खुश रहो कि फांसी की सजा तुम्हें नहीं दी गई।

माली : *(सांस खींचकर)* का कही छोटे सरकार। जौन-जौन बात हमका कह्यो उतौ हमरे लिए कच्ची फांसी है गई। राम-राम… चिरियन केर जान जाय लरिकन के खिलौना… और का कही।

सब : *(चिल्लाकर)* रामू दादा की जै! ❐

